Indian Journal of Economics, Commerce and Management (IJECM)
ISSN:
Website: https://www.economicsandcommerce.in/
Volume 1; Issue 1; January to March 2025; Page No. 8-13

जनसंख्या वृद्धि और विकास: एक अंत:विषयक अध्ययन

डा0 पंकज सिंह
सहायक प्राध्यापक
अर्थशास्त्र विभाग
महा या शासकीय महाविद्यालय
हंडिया, प्रयागराज
Email: pankajsingh.gdc@gmail.com

सारांश

जनसंख्या किसी देश के निर्माण के लिए अनिवार्य घटक है। बिना जनसंख्या के किसी देश की कल्पना नही की जा सकती।जनसंख्या वृद्धि कब तक देश के लिए उपयोगी है। इस बारे में विद्वानों के अलग अलग मत मिलते हैं।विचारकों का एक समूह ऐसा है जो जनसंख्या में होने वाली वृद्धि को देश के लिए नुकसानदायक नही मानता। चाहे जनसंख्या बढ़कर कितनी भी हो जाए। किंतु यह विचार अतिवाद से ग्रसित है। जनसंख्या और देश के संसाधनों के मध्य एक संबंध होता है। अगर बढ़ती हुई जनसंख्या देश के संसाधनों पर बोझ नही डालती तो जनसंख्या वृद्धि को देश के लिए उचित कहा जा सकता है। वहीं अगर जनसंख्या वृद्धि अगर देश के संसाधनों की वृद्धि की तुलना में अधिक है तो इसे जायज नही ठहराया जा सकता। ऐसा कहें की जनसंख्या और संसाधनों के मध्य के संतुलित अनुपात होना चाहिए। इस अनुपात से इधर उधर हटना देश में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक उतार चढ़ाव को जन्म देता है।

मुख्य शब्द: जनसंख्या वृद्धि, विकास, सामाजिक, आर्थिक अध्ययन

जनसंख्या किसी देश के निर्माण के लिए अनिवार्य घटक है। बिना जनसंख्या के किसी देश की कल्पना नही की जा सकती।जनसंख्या वृद्धि कब तक देश के लिए उपयोगी है। इस बारे में विद्वानों के अलग अलग मत मिलते हैं।विचारकों का एक समूह ऐसा है जो जनसंख्या में होने वाली वृद्धि को देश के लिए नुकसानदायक नही

मानता। चाहे जनसंख्या बढ़कर कितनी भी हो जाए। किंतु यह विचार अतिवाद से ग्रसित है। जनसंख्या और देश के संसाधनों के मध्य एक संबंध होता है। अगर बढ़ती हुई जनसंख्या देश के संसाधनों पर बोझ नही डालती तो जनसंख्या वृद्धि को देश के लिए उचित कहा जा सकता है। वहीं अगर जनसंख्या वृद्धि अगर देश के संसाधनों की वृद्धि की तुलना में अधिक है तो इसे जायज नही ठहराया जा सकता। ऐसा कहें की जनसंख्या और संसाधनों के मध्य के संतुलित अनुपात होना चाहिए। इस अनुपात से इधर उधर हटना देश में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक उतार चढ़ाव को जन्म देता है।

भारत की जनसंख्या

भारत की जनसंख्या को कई विद्वानों ने गड़ना करने की कोशिश की है। टीम डायसन ने अपनी पुस्तक भारत की जनसंख्या का इतिहास पहले आधुनिक मानव से वर्तमान तक' में 9500 वर्ष पहले भारत की जनसंख्या का अनुमान लगभग 200000 लगाया है।जाहिर तौर पीआर उस समय का भारत आज के भारत से अलग रहा होगा।लगभग 4000 वर्ष पूर्व सिंधु घाटी क्षेत्र में लगभग 4 से 6 मिलियन लोगों के होने का अनुमान है। शायद यह उस समय विश्व का सर्वाधिक जन घनत्व वाला स्थान था। मौर्य काल में लगभग जनसंख्या गंगा बेसिन में शिफ्ट हो गई थी और बढ़कर 15 से 30 लाख होने का अनुमान है।और 1871 में जब पहले जनगणना की शुरुआत हुई तो 255 मिलियन थी।आजादी के समय यह बढ़कर 343 मिलियन थी। 2011 की जनगणना के अनुसार यह 121 करोड़ हो गई ।भारत में जनसख्य में तीव्र वृद्धि 80के दशक में हुई । 90के दशक के बाद वृद्धि दर गिरावट आई है फिर भी जनसख्या का आकर बढ़ता गया है। जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर 1990 में 2.16परसेंट थी जो 2023 में घटकर 0.81 परसेंट हो गई है। एक एक अच्छा संकेत है की जनसंख्या में बढ़ने की गति धीमी हुई है। भले ही जनसंख्या का कुल आकार भी बढ़ रहा हो। 1990 में फर्टिलिटी दर 4.09 थी जिसमे आने वाले वर्षों में कमी होती रही है। और 2023 में कम होकर यह 2.1 हो गई है। फर्टिलिटी दर का 2.1 प्रतिशत पर आने का अर्थ है की एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को प्रतिस्थापित करने के लिए अब तैयार है।इसलिए 2.1 फर्टिलिटी दर को प्रतिस्थापन दर कहा जाता है। फर्टिलिटी दर प्रति महिला उसके पूरे जीवन काल में पैदा हुए बच्चे की संख्या है। फर्टेलिटी दर 2.1 होने का अर्थ हुआ की एक महिला औसत 2.1 बच्चे को जन्म दे रही है।फर्टेलिटी दर 2.1 होने का अर्थ है की जनसंख्या के बढ़ने की दर में अब कमी आ रही है। इस का यह अर्थ नही की जनसंख्या का कुल आकार भी घट जाएगा। जनसंख्या का आकार बढ़ता हुआ भी हो सकता है।

जनसख्या और देश की राष्ट्रीय आय

जनसंख्या और राष्ट्रीय आय के मध्य में कोई एक दिशीय संबंध देखने को नही मिलता। जनसंख्या देश पर बोझ है या देश के विकास को बढ़ाने में सहायक है यह इस बात पर निर्भर करता है की बढ़ने वाली जनसंख्या का बहुसंख्यक अनुपात कार्यकारी लोगो का है या निर्भर लोगों का है। जनसंख्या में होने वाली वृद्धि से देश की आय बढ़ रही है की नही यह इस बात पर निर्भर करता है की जनसंख्या में काम करने वालें लोगो का अनुपात कितना है। लोगो को प्रशिक्षित करके उत्पादक बनाया जा रहा है की नही। बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए काम करने के अवसर है की नही। अगर स्थिति अनुकूल है तो जनसंख्या में होने वाली वृद्धि निःसंदेह देश की विकास दर को तीव्र करेगी।

भारत के लिए चुनौतियां

भारत में जनसंख्या वृद्धि एक चुनौती है। देश की बढ़ती जनसंख्या के लिए मूलभूत आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा, मकान, बिजली, पानी, स्वास्थ्य, सड़क, शिक्षा आदि की व्यवस्था करना किसी भी सरकार के लिए कठिन कार्य है। किसी भी कल्याणकारी योजना का लाभ आम लोगों तक ऊंट के मुंह में जीरा साबित हो जाता है। देश के संसाधनों पर देश की जनसंख्या दबाव डालती है। बुनियादी सुविधाएं उनकी जरूरतों के अनुपात में कम हो जाती है। एक अध्यन के मुताबिक 2001 से 20110 के मध्य घर विहीन लोगों की सख्या में 37 प्रतिशत की वृध्दि हुई है। 2011 की जनगणना के अनुसार 1.77 मिलियन लोग भारत में भारत में बेघर हैं। यह भारत की कुल जनसंख्या का 0.15 प्रतिशत । मानवाधिकार के अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार बेघर उन लोगों को माना जाता है जो रेगुलर आवास में नही रह रहे हों। इस से यह अनुमान लगाया जा सकता है। बढ़ती हुई जनसंख्या का कितना दबाव देश के सन्साधनों पर पड़ता है। आवासों के निर्माण के लिए जमीन पर दबाव बनता है। पेड़ों की कटाई होती है। इन बढ़ती हुई जनसंख्या के भोजन की व्यवस्था के लिए कृषि में अधिक खाद का इस्तेमाल करके उत्पादकता बढ़ाई जाती है। इन सबका भूमि की उर्वरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। भूमि की उर्वरता की एक सीमा है। जितना अधिक उर्वरता का दोहन होगा भूमि उतनी ही जल्द अनुर्वर हो जायेगी। मृदा विज्ञान का भारतीय संस्थान के शोध में यह बात सामने आई है की सदा बढ़ती हुई खाद्य पदार्थों की मांग की वजह से सघन खेती की प्रणाली प्रचलन में आई है जिसमें रसायनिक खाद का इस्तेमाल बढ़ा है। सघन खेती से भूमि की उत्पादकता वर्ष प्रति वर्ष कमी आती जा रही है। पारंपरिक खेती में किसान खेती को कुछ समय के लिए परती छोड़ देता है ताकि भूमि अपनी उर्वर शक्ति को पुनः प्राप्त कर सके।यह प्रणाली भी निरंतर खेती करने के कारण समाप्त हो गई है। इसका परिणाम यह की मिट्टी में

आर्गेनिक कार्बन की मात्रा घटती जा रही है। यह गंभीर चिंता का विषय है। मृदा में उपस्थित कार्बनिक पदार्थों में वांछित कार्बन को मृदा आर्गेनिक कार्बन कहते हैं। मृदा में उपस्थित वानस्पतिक जीव जंतु अवशेष, सूक्ष्म जीव, कीड़े, मकोड़े, खाद गोबर आर्गनिक कार्बन कहे जाते हैं

जनसंख्या वृद्धि और डिविडेंट

1990 के बाद से जनसंख्या लाभांश का नई अवधारणा प्रचलन में आई है। यह अवधारणा मानती है कि यदि जनसंख्या का प्रशिक्षण और कौशल विकास करके उत्पादक बना दिया जाए तो देश के विकास की गति को तेज किया जा सकता है। इसके सामाजिक और आर्थिक नजरिए से कई फायदे हैं बेरोजगारी कम होगी, नतीजन गरीबी कम होगी, समाज में अशांति कम होगी।लोगो के रहन सहन व जीवन का स्तर ऊंचा उठाया जा सकेगा।

कौशल विकास और रोजगार

जनसंख्या को उत्पादक बनाने के लिए केंद्र सरकार के स्तर और राज्य सरकार के स्तर पर पृथक पृथक विभाग काम कर रहे हैं। केंद्र सरकार के स्तर पर बाते करें तो इस दिशा में NSDC एक बड़ी संस्था है। राज्य सरकार के स्तर पर कौशल विकास मिशन विभाग है जो प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल के आधार पर युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों जैसे सिलाई, ब्यूटी पार्लर, बेकरी, कुटीर उद्योगों की ट्रेनिंग देता है और युवाओं को रोजगार दिलाने में भी मदद करता है। इसके अतिरिक्त यूनिवर्सिटी, कुछ प्राइवेट संस्थान, आईटीआई कॉलेज, पॉलिटेक्निक संस्थान भी कौशल विकास का काम करते हैं।लोग पारिवारिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी भी कौशल विकास का काम सीखते हैं।इस लोगों के लिए घर कौशल विकास का एक माध्यम है।पिता जो अपनी पीढ़ीगत कौशल को सीखता है, अपने बच्चों को बचपन से ही सीखा देता है। ऐसे युवा अपने परिवार के ही काम को आगे बढ़ाते हैं।

कौशल विकास की चुनौतियां

कौशल विकास की चुनौतियां व्यापक हैं।अगर इसे कुछ बिंदुओं में देखा जाए तो इस प्रकार देख सकते हैं--

1. ***पर्याप्त प्रशिक्षण संस्थानों का ना होना*** देश में कामगार जनसंख्या की तुलना में प्रशिक्षण संस्थान कम हैं। भारत में आईटीआई व्यवसायिक शिक्षा की बैक बोन रही है। DGT (Director General of training) राष्टीय स्तर की सर्वोच्च संस्था है। यह देश में व्यवसायिक शिक्षा के विकास ट्रेनिंग एंड

समन्वय के लिए कार्यदाई संस्था है। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार डीजीटी से संबद्ध 14789 आईटीआई हैं (सरकारी और प्राइवेट) जो लगभग 10000 की जनसंख्या पर एक आईटीआई आई है। यदि एनएसडीसी की बात करें तो भारत में इसके वर्तमान में 10373 सेंटर चलाए जा रहे हैं। इसे अगर जनसंख्या के अनुपात के रूप में देखे तो लगभग 136000 जनसंख्या पर एक ट्रेनिंग सेंटर है। इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए प्रशिक्षण संस्थान अभी पर्याप्त नही हैं। उत्तर प्रदेश में उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन चलाया जा रहा है। यह संस्था 226 सरकारी और 136 प्राइवेट संस्थानों के माध्यम से पूरे उत्तर प्रदेश में कौशल विकास का कार्य कर रही है। प्रत्येक जिले में इसकी कार्यकारी यूनिट है किंतु जानकारी के अभाव में लोग इसका या तो लाभ नही ले पाते।

2. ***दूसरा महत्वपूर्ण चुनौती है की जो युवा प्रशिक्षित होकर निकलते हैं-*** उन्हें काम के अवसर नही होने के कारण कोई काम नही मिल पाता प्रशिक्षित होने के बाद भी बेरजगार रहने को अभिसप्त हैं। इस मुख्य कारण यह है की प्रशिक्षित युवाओं की तुलना में की तुलना में काम के अवसर या तो कम हैं या युवा काम की जरूरत के अनुसार प्रशिक्षित ही नही हैं।
3. तीसरी महत्पूर्ण चुनौती यह है की युवा काम का प्रशिक्षण तो ले लेते हैं लेकिन किसी पूंजी के अभाव में अपना स्वरोजगार नही शुरू कर पाते।अप्रैल 2022 तक मुद्रा योजना के अंतर्गत 34.42 करोड़ लोगो को 18.60 लाख करोड़ ऋण आवंटित हुए था। एक बड़ा हिस्सा प्रशिक्षित होने के बावजूद पूंजी के अभाव में काम नही शुरू कर पाता।

संयुक्त राष्ट्र संघ की जनसंख्या पर रिपोर्ट

अभी हाल में ही संयुक्त राष्ट्र संघ ने भारत की जन जनसंख्या का अनुमान वक्त किया है। इस वर्ष के मध्य तक भारत की जनसंख्या चीन की जनसंख्या को पीछे छोड़ देगी।भले ही भारत विश्व में तीव्र गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था हो लेकिन अभी यह मध्यम आय के जाल में फंसी हुई है। भारत की प्रति वक्ति आय पड़ोसी देश बंगला देश की प्रति वक्ति आय से भी कम है। व्यक्ति का जीवन स्तर उसके प्रति व्यक्ति आय का फलन होता है। आय का स्तर बढ़ेगी तो जीवन स्तर में भी सुधार होगा और आय का स्तर कम होगी तो जीवन स्तर भी उतना ही खराब होगा, व्यक्ति बुनियादी जरूरतों को भी पूरा नहीं कर पाएगा।भारत की जनसंख्या भारत पर बोझ है या नही इसका उत्तर विभिन्न विद्वानों के विचारों में खोजा जा सकता है।1798 में माल्थस नाम के अर्थशास्त्री ने बताया की

लंबे समय बाद जनसंख्या वृध्दि देश संसाधनों पर दबाव डालेगी और भुखमरी और बीमारियां बढ़ जाएंगी। आज विश्व की जनसंख्या 8 बिलियन हो गई है। जनसंख्या के संबध में नकारात्मक विचार 1990 के दशक तक रहे जब तक जनसंख्या लाभांश की अवधारणा नही आ गई। बढ़ी हुई जनसंख्या देश के विकास को तभी बढ़ा सकती है, जब जनसंख्या में काम करने वालें लोगो का प्रतिशत अधिक ही और उन्हे उत्पादक बनाया जा सके। भारत के लिए इस दिशा में एक अच्छा संकेत है। भारत में कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत कुल जनसंख्या का 63.4 है जिन्हे दक्ष बनाकर देश की विकास दर को बढ़ाया जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र के अनुमान से भारत की जनसंख्या 2064 तक बढ़ती रहेगी। प्रजनन दर 2.1 प्रतिस्थापन दर से कम है। संयुक्त राष्ट्र के अनुमान भारत की जनसंख्या 2064 तक बढ़ती रहेगी।किंतु उत्पादक दर रिप्लेसमेंट दर से पहले से ही कम है। इसका अर्थ है की महत्वपूर्ण मुद्दा परिवार नियोजन नही है बल्कि बढ़ी हुई जनसंख्या का आर्थिक कामों में सही इस्तेमाल है।

संदर्भिका

नम्रता, आनन्द, *जनसंख्या वृद्धि का कृषि प्रारूप पर प्रभाव*, राजेश पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2018

कुमार, नीशू, *भारत में जनसंख्या वृद्धि एक विमर्श समस्या एवं चुनौतियाँ*, नालंदा प्रकाशन, दिल्ली

बोस, आशीष, *भारत में जनसंख्या स्तिथीकरण की तलाश*, नैशनल बुक ट्रस्ट, 2022

राघव, विजय सिंह, *पुरानी समस्या पर नयी रोशनी*, वलनट पब्लिकेशंस, दिल्ली, 2023

जनगणना निदेशालय, भारत सरकार